जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग

प्रेषक :डॉ. बी.एस. द्विवेदी
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी

क्रमांक– 51
दिनांक–11.06.2026

खरीफ फसलों की तैयारी हेतु कृषक वैज्ञानिक परिचर्चा का आयोजन
किसानों को खरीफ मौसम की बोनी से पूर्व तैयारी हेतु जानकारी प्रदान की गई

जबलपुर 11 जून, 2026। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर के कुलपति डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा की प्रेरणा तथा संचालक विस्तार सेवाएं डॉ. टी.आर. शर्मा और उपसंचालक कृषि श्री यू.के. कटहरे के मार्गदर्शन में परियोजना संचालक आत्मा एवं कृषि विज्ञान केंद्र जबलपुर के संयुक्त तत्वावधान में खरीफ मौसम की बोनी से पूर्व तैयारी हेतु ''कृषक वैज्ञानिक परिचर्चा'' का आयोजन कृषि विज्ञान केंद्र जबलपुर में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सहायक परियोजना संचालक आत्मा श्रीमती नविता उरकुडे ने स्वागत भाषण से किया। आपने किसानों को खरीफ फसलों की बोनी से पूर्व की तैयारी हेतु इस कार्यक्रम के आयोजन को महत्वपूर्ण कदम बताया। कृषि विज्ञान केंद्र जबलपुर की वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. रश्मि शुक्ला ने इस प्रशिक्षण की महत्ता को बताते हुए श्रीअन्न के उत्पादन व प्रसंस्करण पर बल दिया।

तकनीकी सत्र के दौरान वैज्ञानिक डॉ. ए.के. सिंह ने खरीफ फसलों में पोषक तत्व प्रबंधन के बारे में किसान भाइयों को बताया और विशेष रूप से डी.ए.पी. खाद के वैकल्पिक स्रोतों की महत्वपूर्ण्स जानकारी प्रदान की। वैज्ञानिक डॉ. डी.के. सिंह ने एफ.पी.ओ. प्रबंधन के माध्यम से उद्यमिता विकास पर चर्चा की। वैज्ञानिक डॉ. प्रमोद गुप्ता ने खरीफ दलहनी व तिलहनी फसलों के प्रबंधन हेतु प्राकृतिक खेती के बारे में बताया। वैज्ञानिक डा.नीलू विश्वकर्मा ने मिलेट के मूल्य संवर्धन एवं प्रसंस्करण के विषय में चर्चा की। वैज्ञानिक डॉ. अक्षता तोमर ने प्राकृतिक खेती के मूल सिद्धांत तथा डॉ. ऋचा सिंह ने खरीफ फसलों की प्लानिंग तथा प्रबंधन के बारे में किसान भाइयों से विस्तृत चर्चा की। इस अवसर पर 50 से अधिक कृषक एवं कृषि सखी उपस्थित रहकर खरीफ फसलों से संबंधित खेती किसानी में आने वाली चुनौतियों के बारे में वैज्ञानिकों से चर्चा की तथा भूमि सूपोषण एवं विकसित कृषि की संकल्पना को साकार करने की बात कही।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. ए.के. सिंह तथा आभार प्रदर्शन डॉ. दिनेश कुमार सिंह ने किया। कार्यक्रम के सफल संचालन में आत्मा परियोजना के ए.टी.एम. तथा बी.टी.एम. का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।